HARISH CHANDRA PG COLLEGE, VARANASI

विषय : राजनीति विज्ञान

कक्षा : बी ए भाग 3

सत्र : 2020-21

टॉपिक : लोक प्रशासन

सब टॉपिक: लोक प्रशासन अर्थ एवं क्षेत्र

Key Words:-

1) **अर्थ**
2) **परिभाषा**
3) **दृष्टिकोण**

नाम: डॉ अनुपम शाही

विभाग: राजनीति विज्ञान

संकाय: कला संकाय

Harishchandra PG College Varanasi
Mobile No. : 9415355687
Email :shahianupam69@gmail.com
Mobile No of Head :9415256740
Email: pksingh1155@gmail.com

E-CONTAINS

लोक प्रशासन का अर्थ और क्षेत्र

प्रत्येक लोकतांत्रिक सरकार का संचालन करने के लिए एक प्रशासनिक व्यवस्था का होना अति आवश्यक होता है और आज जब लगभग दुनिया भर में लोकतंत्र है तो ऐसे में लोक प्रशासन का महत्व बहुत ज्यादा बढ़ जाता है लोक प्रशासन एक विशिष्ट शैक्षिक क्षेत्र है या यह भी कहा जा सकता है किलो प्रशासन प्रशासन का भाव भाग है जो एक विशिष्ट राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत कार्य करता है लोक प्रशासन राजनीतिक निर्णय को कार्य रूप में परिणत करने का एक साधन है और इस प्रकार योजना बनाने से लेकर सरकार के उद्देश्य और लक्ष्यों का निर्माण निर्णय और जनता का समर्थन प्राप्त करने के लिए विधायिका एवं अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ कार्य करना संगठनों का निर्माण निर्देशन नियंत्रण सभी लोक प्रशासन के अंतर्गत ही आता है।
एक विषय के रूप में लोक प्रशासन का प्रारंभ 1887 से माना जाता है जब वुड्रो विल्सन का एक निबंध 'द स्टडी ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन' राजनीति विज्ञान के एक जर्नल में प्रकाशित हुआ और प्रशासन को राजनीति से स्वतंत्र करने की बात कहीं गई। लोक प्रशासन अपने आप में पड़ा अर्थ समेटे हुए हैं क्योंकि प्रशासन में लोक शब्द मिला देने से ही वह संपूर्ण जनता से संबंधित हो जाता है और यह भी सूचित करता है कि प्रशासन लोगों के लिए किया जाना चाहिए इसका उद्देश्य जनता के हित के लिए प्रशासन करना है जैसा कि बुडरो विल्सन ने भी कहा कि लोक प्रशासन कानून को विस्तृत एवं क्रमबद्ध रूप में कार्यान्वित करने का नाम है कानून को क्रियान्वित करने की प्रत्येक क्रिया एक प्रशासनिक क्रिया है लूथर गुलिक ने भी बताया कि 'लोक प्रशासन प्रशासन के विज्ञान का वह भाग है जो सरकार से संबंधित है और इसीलिए उसका संबंध कार्यपालिका से है जहां की सरकार का मुख्य रूप से काम होता है' यद्यपि उसे स्पष्ट रूप से उन प्रशासनिक समस्याओं पर भी ध्यान देना होता है जो व्यवस्थापिका और न्यायपालिका के क्षेत्र में आती हैं इन परिभाषाओं से भी यही स्पष्ट होता है कि लोक प्रशासन सरकार के कार्यों का भाग है जिसके द्वारा सरकार के उद्देश्य और लक्ष्य की प्राप्ति होती है लेकिन कोई एक परिभाषा लोक प्रशासन किस एकमात्र परिभाषा नहीं हो सकती क्योंकि यह गणित के फार्मूले की तरह नहीं है कि सभी जगह एक ही फार्मूला लागू कर दिया जाए यह देश विशेष कि सरकार उसकी व्यवस्था उसकी परिस्थितियां क्या है ?इस पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। संक्षेप

में कहा जा सकता है कि लोक प्रशासन एक सरकारी गैर राजनीतिक(कार्य दल) है जो अपना कार्य राज्य द्वारा निर्धारित कानून के अनुसार जनता के हित में करता है और यह सरकार का स्थाई अंग है।

लोक प्रशासन का क्षेत्र

सामान्यतया लोक प्रशासन को राज्य सरकार के साथ जोड़ा जाता है और यह माना जाता है कि प्रशासन राज्य की गतिविधियों का अध्ययन है लेकिन संकुचित अर्थ में इसका प्रयोग केवल कार्यपालिका द्वारा किए जाने वाले कार्यों के लिए होता है लोक प्रशासन का क्षेत्र क्या है इसको लेकर विद्वानों में भी बहुत मतभेद है कुछ इसे सरकार के तीनों अंगों से संबंधित और अधिकांश इसको सरकार की कार्यपालिका शाखा से ही संबंधित मानते हैं। क्योंकि लोक प्रशासन ने बहुत ही गतिशील विषय है और इसका क्षेत्र निश्चित करना बहुत कठिन है इसीलिए विद्वानों के बीच इसके क्षेत्र को लेकर बहुत मतभेद हैं लेकिन सामान्य रूप से इस क्षेत्र के संदर्भ में चार दृष्टिकोण प्रचलित है जो निम्नलिखित है-

1- व्यापक दृष्टिकोण
2- संकुचित दृष्टिकोण
3- पोस्टकोर्ब का सिद्धांत
4- लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण

अब यदि व्यापक दृष्टिकोण की बात की जाए तो इसके समर्थकों में एलडी व्हाइट, मार्क्स , बिलोबी और साइमन का नाम आता है जिन्होंने व्यापक दृष्टिकोण को बताते हुए यह कहा किलो प्रशासन सरकार के तीनों अंगों कार्यपालिका व्यवस्थापिका और न्यायपालिका से संबंधित होता है और इसलिए लोक प्रशासन के क्षेत्र में वे सभी क्रियाकलाप सम्मिलित हैं जिनका प्रयोजन सरकारों की नीच को पूरा करना और क्रियान्वित करना होता है वाइट ने कहा किलो प्रशासन में वे सभी कार्य आते हैं जिनका उद्देश्य सार्वजनिक नीति को पूरा करना अथवा लागू करना होता है नीग्रो ने भी इसकी व्यापक परिभाषा की और लोक प्रशासन को लोग समाज में सहयोगी एवं सामूहिक प्रयास तथा कार्यपालिका विधायिका और न्यायपालिका को परस्पर शामिल माल मानते हुए लोक गीत की रचना में लोक प्रशासन की भूमिका को स्पष्ट किया नीति निर्धारण लोक प्रशासन का अभिन्न अंग बन गया है इसलिए लोक प्रशासन के अंतर्गत शासकों का पहला दायित्व है कि वे नीति संबंधी मामलों में मंत्रियों को सलाह दें क्योंकि वह अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं और इसी प्रकार आज

अधीनस्थ विधायन का प्रचलन इतना बढ़ गया है कि अब हम नीचे प्रशासन को अलग मान भी नहीं सकते हैं।

इसी प्रकार संकुचित दृष्टिकोण की बात करें तो इसमें साइमन लूथर गुलिक सिमोन आदि का नाम प्रमुख रूप से दिया जा सकता है जो लोक प्रशासन को केवल कार्यपालिका शाखा से संबंधित मानते हुए यह बताते हैं कि कार्यपालिका के संगठन उसकी कार्यप्रणाली और उसके कार्य पद्धति का अध्ययन ही लोक प्रशासन में किया जाना चाहिए जिसमें कुछ कुछ मुख्य तथ्य होते हैं जैसे इन विद्वानों का यह मानना है कि लोक प्रशासन प्रशासन की वह शाखा है जो कार्यरत कार्यपालिका का अध्ययन करती है यानी असैनिक क्रियाओं से संबंधित निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति अर्थात राष्ट्रीय राज्य एवं स्थानीय प्रशासन के लिए कार्यपालिका उत्तरदाई होती है और इसी के साथ लोक प्रशासन सामान्य प्रशासन के समक्ष सभी समस्याओं से संबंधित रहता है चाहे वह लक्ष्य का निर्धारण हो निर्देशन हो निरीक्षण हो या नियंत्रण हो और इसमें जेसीबी वर्क होता है उसकी समस्याओं का भी अध्ययन किया जाता है चाहे वह भारती प्रशिक्षण सेवा की दशा आदि से संबंधित जितनी भी समस्याएं हैं सब इसके अध्ययन के अंतर्गत आती हैं और साथ ही प्रशासन के अंतर्गत बजट करारोपण और से संबंधित प्रश्नों का भी अध्ययन किया जाता है इस प्रकार यह मानते हैं प्रशासन के अंतर्गत विभिन्न उत्तरदायित्व का पर्याप्त अध्ययन किया जाता है और प्रशासन नहीं कर सकते और जनता विधायिका और कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के प्रति किस तरह उत्तरदायी होते हैं यह भी लोक प्रशासन के अध्ययन का एक महत्वपूर्ण है।

पोस्टकोर्ब सिद्धांत की यदि हम बात करें तो यह लूथर गुलिक द्वारा प्रतिपादित मत है जिसमें POSDCORB इन सभी शब्दों की अलग-अलग व्याख्या की गई है-

P- प्लानिंग या योजना बनाना
O- ऑर्गेनाइजिंग या संगठन बनाना
S- स्टाफिंग या कर्मचारियों की व्यवस्था करना
D- डायरेक्शन या निर्देशन देना
Co- कोऑर्डिनेशन या समन्वय करना
R - रिपोर्टिंग
B- बजटिंग बजट तैयार करना

पोस्टकोर्ब सिद्धांत के समर्थकों का मानना है कि पोस्टकोर्ब क्रियाएं सभी संगठनों में संपन्न की जाती हैं प्रशासन का चाहे कोई भी क्षेत्र हो कुछ भी उद्देश्य हो प्रबंधन की समस्याएं सभी जगह एक

जैसी और अनिवार्य होती हैं हालांकि सिद्धांत की आलोचना की गई लेकिन फिर भी और यह कहा गया की इसी क्रम में सब कुछ घटित नहीं होता है इसमें बहुत से अंतर अलग-अलग जगहों पर होते रहते हैं इसके बावजूद यह एक महत्वपूर्ण विचारधारा है लोक प्रशासन के क्षेत्र को निर्धारित करने के अंतर्गत।

अब हम आदर्शवादी दृष्टिकोण की या लोक कल्याणकारी दृष्टिकोण की बात करें तो यह भी लोक प्रशासन के क्षेत्र से संबंधित एक दृष्टिकोण है और इस दृष्टिकोण के समर्थक राज्य प्रशासन में बहुत अंतर मानते ही नहीं उनके अनुसार वर्तमान समय में राज्य का स्वरूप कल्याणकारी है और लोक प्रशासन भी कल्याणकारी है इसलिए दोनों का लक्ष्य एक ही है और वह है जनहित जनता का सेवा करना ही प्रशासन का अर्थ है और इस बुनियादी आवश्यकता से अधिक महत्व कुछ दूसरा हो ही नहीं सकता तो इसलिए लोक प्रशासन का क्षेत्र जनता के हित में किया जाने वाले सभी कार्यों तक फैला हुआ है

इस प्रकार इन सभी सिद्धांतों का अध्ययन करके मुख्य रूप से जो लोक प्रशासन से संबंधित तथ्य सामने आते हैं उसमें हम यह कह सकते हैं कि लोक प्रशासन एक नीति विज्ञान है एक व्यवसाय है मानवीय आचरण से संबंधित सामाजिक गतिविधि है और कुल मिलाकर एक ऐसी प्रक्रिया है जो राजनीति का एक अविभाज्य अंग है और इसीलिए वह सरकार के कार्यों का वह भाग है जिसे सरकार के लक्ष्य और उद्देश्य की पूर्ति होती है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1) लोक प्रशासन की आधुनिक परिभाषा ।
2) लोक प्रशासन पोस्डकॉर्ब दृष्टिकोण ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1) लोक प्रशासन से आप क्या समझते हैं इसके क्षेत्र की व्याख्या कीजिए।
2) लोक प्रशासन के पोस्डकॉर्ब की आलोचनात्मक व्याख्या कीजिए।

REFERENCES

1) लोक प्रशासन के सिद्धांत : अवस्थी एवं माहेश्वरी
2) लोकप्रशासन : डॉ पी० डी० शर्मा

DECLARATION

The content is exclusively meant for academic purpose and for enhancing teaching and learning. Any other use for economic/commercial purpose is

strictly prohibited. The users of the content shall not distribute, disseminate or share it with anyone else and its use is restricted to advancement of individual knowledge. The information provided in this e-content is authentic and best as per knowledge.

धन्यवाद